Subject :- History (Sub)
Degree Part I (Sub)
Lecture No - 44

Dr. H. N. Mahto
Deptt of History
9835007357

Date - 14. 5. 2020

Ques :- पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई०) के कारणों, स्वरूप एवं परिणामों की विवेचना करें।

Ans :- बाबर द्वारा पंजाब पर अधिकार किये जाने तक इब्राहिम लोदी ने बाबर को आगे बढ़ने से रोकने का कोई विशेष प्रयास नहीं किया था, परंतु जब बाबर पंजाब से आगे दिल्ली की तरफ बढ़ा तो इब्राहिम ने स्वयं उसका मुकाबला करने का निश्चय किया। वह एक विशाल सेना के साथ पानीपत के मैदान की तरफ बढ़ा। बाबर भी तेजी से लाहौर से पानीपत की तरफ चला। मार्ग में उसने अनेक लोदी चौकियों पर अधिकार कर लिया। 12 अप्रैल, 1526 को बाबर पानीपत पहुँचा जहाँ अफगान सुलतान एक बड़ी सेना के साथ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

पानीपत के युद्ध के अवसर पर दोनों पक्षों की सैन्य संख्या क्या थी यह निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता है। कहा जाता है कि इब्राहिम की सेना में एक लाख सैनिक एवं एक हजार हाथी थे। समकालीन साक्ष्य के अनुसार इब्राहिम की सेना में प्रत्यक्ष तौर से करीब 20,000 घुड़सवार थे। इसी संख्या के लगभग अफगान सरदारों द्वारा भेजे गये घुड़सवार सैनिक एवं करीब 30,000 पैदल सैनिक थे। हाथियों की एक बड़ी संख्या भी उसके पास थी। इसके विपरीत बाबर की सेना अपेक्षाकृत छोटी थी। अबुल फजल के अनुसार बाबर की सेना में 12,000 घुड़सवार थे। इसके अतिरिक्त पंजाब विजय के पश्चात् उसकी सेना में भारतीय मित्रों की सैनिक

अफगान सैनिक एवं किराए के तुर्की सैनिक भी शामिल हो चुके थे।
अतः बाबर की सेना भी कम नहीं थी, लेकिन यह निश्चित
रूप से इब्राहिम की सेना से छोटी, मगर ज्यादा सशक्त थी।

पानीपत पहुँचकर बाबर स्थिति का जायजा
लेता रहा। उसने खाइयाँ खोदकर और पेड़ों की बाड़ खड़ी
कर अपनी सुरक्षा की व्यवस्था की। खाइयों के सामने गाड़ियों
खड़ी कर उसने सुरक्षात्मक दीवार सी बना डाली और अग्रिम
सुरक्षा और तोपचियों की सुविधा के लिए हर दो गाड़ियों
के बीच लकड़ी की तिपाइयों पर पाँच या छः ढालें खड़ी
कर दी गईं जिससे कि गोलंदाज सुगमतापूर्वक खड़ा होकर
गोला चला सकें। हर दो गाड़ियों के पहियों को मजबूत
रस्से से बाँध दिया गया तथा गाड़ियों के बीचों बीच
आने जाने के लिए मार्ग छोड़ दिया गया जिससे आवश्यकतानुसार
बाबर के घुड़सवार निकल सकें। इस प्रकार बाबर ने
अपनी व्यूह रचना रूमी अथवा 'ऑटोमन' पद्धति द्वारा किया।
बाबर ने अपनी समस्त सेना को दाहिना, मध्य, बायाँ,
अग्रिम और सुरक्षित पंक्तियों में विभाजित कर रखा था।
इसके अतिरिक्त दो विशाल पार्श्व दल या तुलुगमा की
भी व्यवस्था की गई। बाबर की सहायता के लिए
बाबर के योग्य सरदार और दो कुशल तोपची - उस्ताद
अली और मुस्तफा भी मैदान में थे। बाबर की तुलना में
इब्राहिम की सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ नहीं थी।

लगभग एक सप्ताह तक दोनों सेनाएँ
आमने-सामने डटी रहीं। 19-20 अप्रैल की रात्रि में
बाबर के सैनिकों ने इब्राहिम के शिविर पर धावा बोला।
... इब्राहिम को शिविर से निकलकर आगे
बढ़ना पड़ा। 21 अप्रैल 1526 को प्रातः ही दोनों सेनाओं
की मुठभेड़ हुई। अफगान तेजी से आगे बढ़े परन्तु बाबर
की सुरक्षा पंक्ति को देखकर उन्हें ठिठकना [?] पड़ा।

बाबर ने मौके का लाभ उठाकर इब्राहिम पर चारों तरफ से आक्रमण कर उसे घेर लिया। बाबर के तीरंदाजों और तोपचियों उसकी तुलुगमा पद्धति ने इब्राहिम की सेना के पाँव उखाड़ दिए। इब्राहिम ~~वीरतापूर्वक~~ युद्ध में बाबर का सामना करता रहा। युद्ध मध्याह्न तक चलता रहा। इब्राहिम लोदी युद्ध क्षेत्र में ही करीब पन्द्रह हजार सैनिकों के साथ मारा गया। इब्राहिम की सेना भाग खड़ी हुई। बाबर के सैनिकों ने उनका पीछा दिल्ली के निकट तक किया। बाबर अपने संस्मरण में लिखता है कि आगरा पहुँचकर उसे ज्ञात हुआ कि पानीपत के मैदान में 40-50 हजार व्यक्ति मारे गये। इस महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख करते हुए बाबर कहता है, "सर्वशक्तिमान परमात्मा की अपार अनुकम्पा से यह कठिन कार्य मेरे लिए सुगम बन गया और वह विशाल सेना आधे दिन में मिट्टी में मिल गई।"

पानीपत के युद्ध के परिणाम :-

पानीपत के युद्ध के परिणाम भारतीय इतिहास और बाबर के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण एवं निर्णायक सिद्ध हुई। पानीपत के युद्ध ने भारतीय इतिहास के एक अध्याय का समापन एवं दूसरे की शुरुआत कर दी। इस युद्ध ने विघटनशील तुर्क अफगान उमरावों को अपने आघात से कुचल दिया तथा भारतीय राजनीति में एक नव खून- मुगल का प्रवेश कराया। बाबर की विजय ने लोदी वंश की सत्ता समाप्त कर दी। अफगान कुछ समय के लिए भारत की सर्वोच्च सत्ता से वंचित कर दिए गए। अब लोदी वंश की जगह एक ऐसे वंश - मुगल का शासन आरंभ हुआ जिसने अपना विदेशी इतिहासकारों की तरह से भाग का ही तरह से अपना

Scanned with CamScanner

भारतीयकरण किया तथा लगभग पंद्रह वर्षों के पश्चात् (के बाद लगभग तीन शताब्दियों तक भारत का शासन करते रहने का गौरव प्राप्त किया। मुगलों से ही अंग्रेजों ने वास्तविक सत्ता प्राप्त की। इस वंश ने अनेक योग्य शासकों को दिया। जिन्होंने भारत की सांस्कृतिक, कलात्मक एवं भौतिक प्रगति में अमूल्य योगदान दिया। पानीपत के युद्ध का वास्तविक महत्व इस बात में निहित है कि 1192 ई० के तराईन के युद्ध में जिस दिल्ली सल्तनत ने जन्म लिया उसने 1526 ई० में पानीपत के मैदान में अंतिम सांस ली।

पानीपत के युद्ध के पश्चात् बाबर के अधीन पंजाब से आगरा तक का क्षेत्र आ गया। लोदियों (अफगानों) की कमर टूट गई। इतिहासकार लेनपुल के शब्दों में, अफगानों के लिए पानीपत का युद्ध उनका प्रलय था। इसने उनके राज्य और शक्ति का अंत कर दिया। इस युद्ध के परिणाम-स्वरूप भारत में बाबर की विजय का दूसरा चरण पूरा हुआ। उसकी विजयों में भाग बंटाने वाला कोई नहीं था। आलम खाँ और दौलत खाँ की शक्ति समाप्त हो चुकी थी। राणा संग्राम मेवाड़ में ही व्यस्त था। अतः निर्विरोध बाबर लोदी राज्य का मालिक बन गया। 27 अप्रैल, 1526 को दिल्ली में 'खुतबा' में उसका नाम पढ़ा गया। हुमायूँ ने आगरा पर अधिकार कर बाबर को वहाँ का बादशाह स्वीकार किया। इस प्रकार, अफगानों की नई और पुरानी (आगरा-दिल्ली) दोनों ही राजधानियाँ बाबर के अधीन हो गईं। इसके साथ ही लोदियों के सम्पूर्ण राज्य पर भी उसकी सत्ता स्थापित हो गई। हुमायूँ को आगरा में एक लोदी खजाना भी मिल गया। इस धन से बाबर की आर्थिक कठिनाइयाँ

Scanned with CamScanner

उठ खड़ी हुई। अब जौनपुर तक का समूचा क्षेत्र बाबर के सामने खुला पड़ा था।

सैनिक दृष्टिकोण से भी पानीपत के युद्ध के परिणाम महत्वपूर्ण निकले। इस युद्ध ने भारतीय सैन्य दुर्बलता को उजागर कर दिया। इब्राहिम की विशाल सेना को बाबर ने अपने कुशल सैन्य संचालन से पराजित कर दिया। इस युद्ध में भारत में पहली बार तोपखाने एवं तुलुगमा पद्धति का प्रयोग बाबर ने सफलतापूर्वक किया। इस नवीन युद्ध पद्धति ने भारत में युद्ध का स्वरूप ही बदल दिया। इसके साथ-साथ बाबर की विजय से उसकी सैनिक क्षमता की धाक भारतीय राज्यों पर जम गई। वे उससे भयभीत हो गए, परंतु सभी राज्यों की ऐसी स्थिति नहीं थी। अतः शीघ्र ही उत्तर भारत पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए एक नए संघर्ष का आरंभ हुआ।

इस प्रकार इब्राहिम की चारित्रिक दुर्बलता, उसकी दोषपूर्ण सैन्य संचालन की नीति, सेना का संगठन, भारतीय राज्यों और स्वयं उसके सरदारों के असहयोग के कारण इब्राहिम लोदी को पानीपत के मैदान में पराजय का मुख देखना पड़ा।

Dr. Hem Narayan Mahto
Associate Professor
Deptt of History
R.N. College, Pandaul

Scanned with CamScanner